आर्योदया

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 323 ARYA SABHA MAURITIUS *15th Dec. to 31st Dec. 2015*

शिव-संकल्प मन्त्राः

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दुरङ्गमञ्ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।

यजुर्वेद ३४/१

LA PURIFICATION DE L'ESPRIT

Om ! Yajjagrato dūramudaity daivam tadu suptasya tathaivaiti
Durangamam jyotishām jyotirekam tanme manaha shiva sankalpamastu.

Yajur Véda 34/1

Glossaire / Shabdārtha :
yat – celui qui par ta grâce
daivam – les attributs / les qualités / le pouvoir divin de l'âme qui se manifeste par l'intermédiaire de l'esprit ('the mind' en Anglais)
durangamam – qui va loin, qui mène l'homme très loin, en d'autres mots, qui l'aide à se développer, qui élargit son horizon de connaissance
jyotishām – l'esprit qui active tous nos sens et les éclaire
jyotiha – lumière spirituelle / divine qui les éclaire
ekam – un seul / unique
jagrataha – dans l'état de veille
dūram – très très loin
utaha, aiti – qui se déplace ou court très vite, qui est dynamique
ou – encore
tata – ce / celui qui
suptasya – celui qui dort (il peut-être soit en état de rêve soit en profond sommeil)
tathā, eva – de la même façon
eti - qui agrémente ses qualités innées / sa nature / sa spécificité
me – mon, ma, mes
manaha – état où l'on est
shiva-sankalpam-astu – Que celui qui est déterminé à faire du bien au monde soit bien inspiré, et qu'il réussisse

Introduction

Le 34ème chapitre du Yajur Veda comprend 58 versets (mantras), dont les six premiers traitent de la purification de l'esprit. Ces versets sont connus comme 'Shiv-Sankalpa mantras', et sont aussi récités comme prière à l'heure du coucher.

Ces versets sont incomparables ou uniques dans leurs genres. Ils font état du fonctionnement de l'esprit ('the mind' en Anglais, 'Mana' en Hindi) -- Ils nous indiquent que tout ce qui a été fait dans ce monde provient de l'esprit de l'homme, en d'autres mots, ce sont les fruits de son imagination, voire de sa pensée, traduits en actions concrètes. Dans ces versets nous offrons à Dieu une prière spéciale pour le salut de notre esprit.

cont. on pg 4

N. Ghoorah

नवा वर्ष का सन्देश

डा० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न - प्रधान आर्य सभा

देखते-देखते सन् २०१५ के बारह मास व्यतीत हो गए और दिसम्बर का आख़िरी दिन भी बीत गया। वर्ष २०१५ बूढ़ा होकर हमसे विदा हो गया। जाते-जाते यह साल अपनी विविध स्मृतियाँ छोड़ गया। इस साल की यादें, खट्टी-मीठी दोनों हैं। हमारे घर, परिवार, समाज और देश को ही लीजिए। इन सबमें आप उन्नति और अवनति दोनों के ही दर्शन कर चुके हैं।

जिस समाज ने अपनी संस्कृति के मूल्यों को जीवन में महत्व दिया, वह समाज विकृति से दूर रहा, उन्नति करता गया। हर समाज की अपनी संस्कृति होती है। अपने रीति-रिवाज़, अपनी मान्यताएँ, अपनी परम्पराएँ आदि होती हैं। संस्कृति से ही किसी समाज की पहचान होती है। महात्मा गांधी लिखते हैं – 'संस्कृति मानव जीवन की आधारशिला है। यह आचरण और व्यक्तिगत व्यवहार की छोटी-सी-छोटी बातों में व्यक्त होती है ।'

हम अपने आचरण और व्यक्तिगत व्यवहार के कारण ही उन्नति व अवनति की ओर कदम बढ़ाते हैं।

भाषा का संस्कृति से बड़ा गहरा सम्बन्ध है। भाषा संस्कृति की वाहिनी होती है। यदि आदमी अपनी भाषा को अपने जीवन से परे कर देता है तो उसकी संस्कृति की हत्या हो जाती है। संसार का इतिहास साक्षी है कि जिन जातियों की भाषा मिट गई, उसका नामोनिशान मिट गया। नये वर्ष के स्वागत के साथ ही हम प्रण करें कि अपनी भाषा की रक्षा करेंगे।

नूतन वर्ष के शुभावसर पर हम छोटे-बड़े अपनी जान-पहचान के लोगों को अभिवादन करते हैं। हमारे लोग हाथों को जोड़कर, शीश झुकाते हुए नमस्ते बोलकर अभिवादन करते हैं। नमस्ते का अर्थ होता है कि मैं आपका हृदय से सम्मान करता हूँ। यदि हम से छोटी उम्र के व्यक्ति ने हमें नमस्कार किया तो हमारे हृदय से उसके लिए आशीर्वाद की भावना प्रकट होती है। हम उसके लम्बे जीवन की कामना करते हैं। यदि हमारी उम्र के बराबर वाले ने हमें नमस्ते की तो हम

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

श्रद्धानन्द के वीर सैनिक कहाँ?

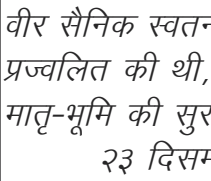

स्वामी श्रद्धानन्द जी *एक आदर्श आर्य नेता थे। उनके प्रभावशाली कर्मों, गुणों और मानवीय उपकारों के प्रभाव से हज़ारों व्यक्तियों की आत्माएँ जाग उठी थीं और वे उनके वीर सैनिक बनकर सेवाकार्यों में समर्पित हो गए। हम उनके तपोमय जीवन के प्रति आभारी हैं।*

मानव को सही मार्ग दिशा दिखाने वाले श्रद्धानन्द ने भारतीय जनता का बड़ा ही उपकार किया था। अबोध जनों के हित में उन्होंने अद्वितीय कार्य किया था। सामाजिक सुधार में उन्होंने बड़ा ही सराहनीय आंदोलन चलाया था। उनके आंदोलन कार्यों से प्रेरित होकर असंख्य विद्वान्, धनवान्, समाज सेवक और नेता प्रभावित हो उठते थे। लाखों व्यक्ति उनके व्रतधारी सिपाही बनकर उनका सहयोग देने लगे थे। जिनके तप-त्याग, संघर्ष, दृढ़-संकल्प और सेवा कार्यों से भारतीय जनता में नई जागृति आई थी।

जन उद्धारक श्रद्धानन्द ने वेदों के उद्धार, सामाजिक सुधार महिलाओं के कल्याण, अबलाओं, विधवाओं, दलितों, अनाथों और नादानों के उपकार में जो अद्वितीय कार्य किया था, वह बड़ा ही प्रभावोत्पादक है। गुरुकुलों की स्थापना करके उन्होंने छात्रों को सही ज्ञान प्रदान किया था, ताकि वे एक चरित्रवान्, गृहस्थी, कर्मठ समाज-सेवी, कर्मयोगी नागरिक और जनहितैषी मानव बन सके। हिन्दू समाज उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञ है।

व्रतधारी श्रद्धानन्द ने शुद्धि-आंदोलन कार्यों में जो अद्‌भुत कार्य किया था, वह अविस्मरणीय है! स्वधर्म का परित्याग करने वाले लाखों हिन्दुओं को शुद्धि-संस्कार द्वारा पुनः वैदिक धर्म की ओर अग्रसित किया था। उनके महा आंदोलन कार्यों से प्रभावित होकर असंख्य हिन्दू भाई-बहनें इस्लाम तथा ईसाई-धर्म में प्रवृष्ट होने से बच गए। उनके तपोमय जीवन से आज के जवानों को प्रेरणा प्राप्त करने की जरूरत है।

वेद प्रचार समाज सुधारक तथा माननीय सेवक श्रद्धान्द एक परम देश-भक्त भी थे। उन्होंने परतन्त्र भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में पूरा संघर्ष किया था। भारतीय जनता में उन्होंने देश-भक्ति की भावना उत्पन्न की थी। उनकी उत्तेजना से लाखों वीर सैनिक स्वतन्त्रता संग्राम के मैदान में उतर आए। जो देश-प्रेम की अग्नि उन्होंने प्रज्वलित की थी, वह धीरे-धीरे सारे देश में फैलती गई और उनके वीरों ने अपनी मातृ-भूमि की सुरक्षा हेतु अपने जीवन का बलिदान किया था।

२३ दिसम्बर १९२६ ई० को महात्यागी श्रद्धानन्द ने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था। हम ८९ वर्ष बाद भी आज तक उनका बलिदान दिवस भव्य रूप से मनाते आ रहे हैं ताकि हमारे युवक-युवतियाँ उनके तप, त्याग, संघर्षमय जीवन और परोपकार से प्रेरित हो सके। वे भी वीर सैनिक बनकर वैदिक-धर्म, भारतीय संस्कृति तथा भाषा को जीवित रखने में अपना जीवन समर्पित कर सके, जिनके उपकारों से हमारे परिवारों, सामाजिक संस्थाओं और असहायों की रक्षा हो ।

तपस्वी श्रद्धानन्द एक बहुगुण सम्पन्न महापुरुष थे। उनके बाद आर्य परिवारों में आज तक कोई भी ऐसा आर्य पुत्र पैदा नहीं हुआ है। आज हमें श्रद्धानन्द जैसे आर्य पुरोधाओं की खोज है। जो श्रद्धानन्दी गृहस्वामी बनकर अपने परिवारों का सुधार कर सके उनके समान पिता, भ्राता और पुत्रों की जरूरत है जो हमारी भटकी हुई कन्याओं की रक्षा करे। शुद्धि आंदोलन कर्त्ता सेवकों की तलाश है, जो हमारे जवानों को ईसाई, बहाई, मिसियों या ज़ेओवा के फंदे से दूर कर सके। भूत-प्रेत, अन्ध-विश्वास, भ्रमजाल से छुड़ाने वाले श्रद्धानन्द जैसे नेताओं की खोज है। कहाँ है हमारे श्रद्धानन्द वीर सेवक ? यह हमारे लिए एक बड़ी चुनौती है! अगर हम श्रद्धानन्द के वीर सैनिक बनकर अपने परिवारों, सामाजिक संस्थाओं और असहायों की सुरक्षा में समर्पित हो जाएँ तो श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का आयोजन सार्थक होगा ।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस हम सभी की आत्माएँ उत्तेजित करे, हमें उत्साहित करके परोपकारी भावना प्रदान करे, श्रद्धानन्द आदर्श, महात्याग और तपस्वी जीवन हमारे वीर सैनियों के लिए अवश्य प्रेरणादायक हो ।

बालचन्द तानाकूर

श्रद्धानन्द निर्वाण नहीं बलिदान !

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा

यह सर्वविदित है कि अगर स्वामी दयानन्द आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् पंजाब नहीं जाते तो समाज का प्रचार तो होता पर प्रसार नहीं होता जितनी जल्दी हुआ। स्वामी जी ने मूर्धन्य सेवकों के सम्पर्क में आये जिन्होंने आगे चलकर समाज के सेवा कार्य को आगे बढ़ाया। इनमें मुख्य थे – महात्मा हंसराज जो डी.ए.वी. कोलिज के खुलने के बाद निःशुल्क प्रिंसिपल बनें, पंजाब के शेर लाला लाजपतराय, गुरुदत्त विद्यार्थी और महात्मा मुंशीराम जो आगे चलकर स्वामी श्रद्धानन्द बनें और आर्यसमाज के विद्वान्-सेवकों में स्वामी दयानन्द के बाद उन्हीं का नंबर लगा। कह सकते हैं कि अगर १८७९ में राय बरेली में २१ वर्षीय मुँशीराम, जो सब प्रकार के ऐबों से भरे थे, की भेंट नहीं होती और जो १५ व्याख्यान दिये थे। उनमें से १४ का रसास्वादन नहीं किया होता तो नास्तिक से आस्तिक नहीं बनते और न श्रद्धानन्द बनते और न १९०२ में काँगड़ी में गुरुकुल खोलते। आज गुरुकुल ने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया है।

उसी पंजाब प्रान्त में मूँशीराम के हाथ सत्यार्थपकाश की एक प्रति लगी थी। इसका वृत्तान्त स्वामी जी के ही शब्दों में पढ़िए *"समाज मंदिर में पहुँचा, मेरे हाथ में सत्यार्थप्रकाश रखा गया। मैंने मूल्य दिया और इस प्रकार आह्लाद पूर्वक लौटा, मानो बड़ा कोष हाथ लग गया है। मेरे साथी मुझे प्रातःकाल के भोजन में सम्मिलित न देख विस्मित थे। जब मैं पहुँचा तो सायंकाल का भोजन परोसा जा रहा था। खूब भूख लगी थी, भोजन रुचि पूर्वक किया। शाम को भ्रमण के लिए गया ही नहीं, लैम्प जला, सत्यार्थप्रकाश की भूमिका, समाप्त कर प्रथम समुल्लास के स्वाध्याय में लग गया।"*

जो पढ़े-लिखे लोग सत्यार्थप्रकाश पढ़कर प्रभावित हो जाते हैं वे आर्यसमाज का सदस्य बनता है। मोरिशस में भी यही बात बिती थी। जब खेमलाल लाला, दलजीतलाल और जगमोहन गोपाल ने सत्यार्थप्रकाश पढ़ लिया तब आर्यसमाज की स्थापना करने का विचार किया और गुरुदत्त विद्यार्थी ने अठारह बार पढ़ लिया।

लाला मुँशीराम से रहा नहीं गया। उन्होंने एक मित्र के सामने अपनी इच्छा प्रकट की समाज के सदस्य बनने की। मित्र का नाम था भाई सुन्दरलाल जी जो पहले ही से समाज के पक्के सदस्य बन गये थे। जैसे शराबी चाहता है कि हमारा साथी शराबी बने, जुआरी चाहता है कि उसका साथ जुआरी बनें समाजी चाहता है उसका साथी समाजी बनें। सुन्दरलाल बिना समय जाया किये मुंशीराम को लेकर सीधे-लाहौर समाज की ओर बढ़े और प्रवेश करवा दिया। मेम्बर बनने के पहले दिन ही मुंशीराम ने एक २०-२५ मिनट का व्याख्यान दिया जिसे सुनकर उनकी दृढ़ता का परिचय मिल गया था। आदमी की प्रतिमा अन्दर छिपी रहती है। एक नगण्य घटना या एक मामूली बात के संघात से वह प्रतिभा बाहर दिखने लगती है। उसी लाहौर शहर के प्रवास काल में मून्शीराम पूरा शाकाहारी बन गये। आस्तिकता के सभी चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे।

गुरुदत्त विद्यार्थी तो १९ वर्ष की अवस्था में जब स्वामी दयानन्द को प्राण विसर्जन करते देखा था तो नास्तिक से आस्तिक बन गए थे और स्वामी जी द्वारा लिखी अमर कृति सत्यार्थप्रकाश के दिवाने बन गए थे।

स्वामी श्रद्धानन्द और पण्डित लेखराम

पण्डित यश्वन्तलाल चूड़ामणि एम.एस.के.,आर्य भूषण

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बचपन का नाम बृहस्पति था। उनके पिता ने उनको मुंशीराम नाम दिया था। बाईस वर्ष की आयु से साठ वर्ष की आयु तक मुंशीराम अत्यन्त ही श्रद्धा पूर्वक सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक कार्य डट कर करते रहे। साठ वर्ष की आयु में जब उन्होंने सन्यास ग्रहण किया तब इसी गहरी श्रद्धा के कारण उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द नाम से दीक्षित किया गया। स्वामी जी के कार्य ऐसे समय में चल रहे थे जब भारतवर्ष दो कठिन परिस्थितियों से गुज़र रहा था – अंग्रेज़ों का अत्याचार पूर्ण शासन और मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं का धर्म परिवर्त्तन। स्वामी जी ने अपना अधिकतर समय इन दो समस्याओं को हल करने में बिताया।

उन दिनों उनके साथ चलनेवाले अनेक समकालीन उत्कृष्ट धार्मिक एवं सामाजिक नेता थे जैसे पण्डित लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थि, महात्मा हंसराज, लाल लाजपतराय आदि। परन्तु इनमें सबसे अधिक घनिष्टता पण्डित लेखराम जी के साथ थी। पण्डित लेखराम जी स्वामी श्रद्धानन्द जी के घर के सदस्य जैसे थे और उनके घरवालों से परिवार जैसा रिश्ता था। कभी कभी तो पण्डित लेखराम जी कई दिनों तक उनके घर में ही रहा करते थे। दोनों के कार्यक्षेत्र लगभग बराबर थे, इसीलिए दोनों में खूब बनता था। उनके प्रमुख कार्यों में शुद्धि कराना सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। दोनों नेता धर्म परिवर्त्तन किये हुए सैकड़ों हिन्दुओं को अपने धर्म में वापस लाये। यही कार्य उन दोनों के जीवन के सबसे जटिल और खतरनाक था। मृत्यु पर्यन्त दोनों ने शुद्धि कार्य को बड़ी दृढ़ता और श्रद्धा के साथ किया।

६ मार्च १८९७ को लाहौर में जब पण्डित लेखराम जी की हत्या हुई तब जालन्धर में यह अफवाह फैल गई कि किसी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की छुरे से हत्या कर डाली। सैकड़ों लोग स्वामी जी के घर और आर्य मन्दिर के सामने उनकी खबर लेने के लिए जमा हो गये थे। यह भ्रम इसलिए फैला क्योंकि कार्य करते हुए दोनों को सदा साथ देखा जाता था और उस समय स्वामी जी कई दिनों से घर से बाहर थे। संयोग वश उन दिनों स्वामी जी भी लाहौर में थे परन्तु पण्डित लेखराम जी की हत्या के समय वे उनके साथ नहीं थे। पता लगाने के लिए किसी को लाहौर भेजा गया। वापस लौटने पर व्यक्ति ने बताया कि छुरे से पण्डित लेखराम जी की हत्या हुई, स्वामी जी की नहीं। परन्तु कभी कभी अफवाह भी भविष्यवाणी का रूप धारण कर लेती है। पण्डित लेखराम जी की हत्या के लगभग तीस वर्ष बाद, २३ दिसम्बर १९२६ को एक मुसलमान ने गोली मारकर स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या कर दी । हत्यारे को तो ब्रह्म-हत्या का पाप लगेगा ही परन्तु पण्डित लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द ने जन सेवा हेतु अपनी जान गँवाकर आर्य बलिदानियों के बीच अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित कर दिया। सच है, सच्चे बलिदानी कभी मरते नहीं, बल्कि सदा के लिए अमर हो जाते हैं।

नव वर्ष का सन्देश

पृष्ठ १ का शेष भाग

उनका हार्दिक सम्मान करते हैं। इससे प्रेम की भावना प्रकट होती है।

बड़े-बुज़ुर्गों, बराबर उम्र वालों और छोटों को नमन करना शिष्टाचार का अंग है और यह शिष्टाचार हम अपनी संस्कृति से ही सीखते हैं। महाराज मनु लिखते हैं-

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।

अर्थात् जो नम्र और सुशील लोग बड़े जनों का अभिवादन करते हैं, नमन करते हैं, उसकी आयु विद्या, कीर्ति और बल हमेशा बढ़ता रहता है। बड़ों का आदर करना और छोटों को आशीर्वाद देना सांस्कृतिक मूल्य है। इस मूल्य को धारण करने वाले व्यक्ति की बड़ाई सभी करते हैं, उन्हें शिष्ट और संस्कृत समझते हैं।

अभिवादन जैसे सांस्कृतिक मूल्य को सभी को अपनाना है। माता-पिता और बड़ों का यह परम कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को सांस्कृतिक मूल्यों को ग्रहण करने की शिक्षा एकदम छुटपन से ही दें। आज इस मूल्य को बहुत से बच्चे छोड़ते जा रहे हैं। कुछ बच्चे उद्दंड होने के कारण नमस्ते नहीं बोलते और कुछ नमस्ते बोलने में शर्माते हैं। घर पर आये मेहमान का भी अभिवादन नहीं करते।

संस्कृति का पालन करने से व्यक्ति आदरणीय बनता है। गांधी जी के इस कथन को हम न भूलें कि संस्कृति मानव जीवन की आधारशिला है। मनुष्य वही है जो मनन करता है, सोचता है, विचारता है। हमें यह भूलना नहीं है कि संस्कृति से ही हम संस्कार प्राप्त करते हैं। संस्कार और संस्कृति से खाली होने पर मनुष्य की मनुष्यता समाप्त हो जाती है। इसलिए ज़रूरी है कि हम सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करें।

सन् २०१६ नई उमंगें, नई आशाएँ लेकर आया है। इस शुभावसर पर हम अपने रिश्ते-नाते वालों और हित-मित्रों को अभिवादन करते हुए उनके सुखी-समृद्ध जीवन की मंगल कामनाएँ करते हैं।

SEASONS GREETINGS

Time never stops. What is considered present now will, in the next second, be things of the past… the immediate future will shortly be the present and thereafter be the past. Time never stagnates… never waits for anybody.

The beginning of a new era is a cross-road on the lifeline of all living and non-living things. Such a point in time is a milestone for fresh starts… reaffirmations of love, friendship and compassion… pledges for a brighter future… The promises we make to ourselves, to our dear ones and to others are very purposeful… However, à l'heure du bilan, they appear more-than-often superficial.

Year-in-year-out we are witness to how our resolutions to be more committed, to reverse bad feelings …etc. are short-lived. We think ourselves as helpless when our good intentions just evaporate in thin air. Yet if we regularly take the pains to review our strategies we shall be able to correct the deviations and realise our dreams.

Bhutam… bhuvanam… bhavishyat…
As we bid farewell to the ending era…
Aa we get ready to welcome a new one…
The passage of time…
Reminds us of the need to…
Frequently review our achievements and failures…
Methodically embark new initiatives…
Kindle new hopes for enhanced peace and happiness…
Vouch to be courteous towards relatives and friends,
Be compassionate towards the needy…
Live up to new aspirations for success…

Dhriti, Kshamā, dama…
Ahimsā, satya…
Saucha, Santosh, tapah, swādyāya, ishvara pranidhāna
It is time to…
Extend warm greetings those less known or unknown…
Remove the clutter in our mind…
Get over past memories…
Forgive all those who have hurt us…
Leave it the almighty do justice…
Learn from our past mistakes…
Start off NEW…
Be open new relationships, friendship…
Work on the present and carve a wonderful future…
Remind ourselves of all the happiness and good tidings…
Keep the joyful spirit aglow…
Strive for a brighter tomorrow…
Never fall short of time for prayers and virtuous deeds…
Keep our moods and determination unshaken…
Never lose track of the goals of human life…
Be always full of courage, faith and determination…
Always look ahead on the road success…
Pay respect elders and count on their blessings…

Mitrasya chakshushā samikshā mahe…
Jivema sharadah shatam…
May…
What we see in the mirror delight us…
What others see in us delight them…
All love us enough to forgive our faults...
All show us the correct path when we err…
All tell the world about our virtues…
Our journey be wonderful…

Yam medhām devaganah…
Dhiyo yo naha pracho dayāta…
Tejo asi tejo mayi dhehi…

May we be blessed with long life, health, wealth, wisdom!
May we be blessed with vision, passion, motivation or direction!
May we open up to a new path and life!
May we realise new visions, horizons, opportunities!

At the periphery of the generally accepted New Year
May we dare to accept and remedy our flaws!
May we listen to the inner voice before gearing in our thoughts, speech and actions!
May the Omnipresent, Omniscient, empower us to undergo changes that are good for us and for society at large!

Best wishes for a more satisfying life… better physical, moral / spiritual and social standards.

Editorial Team

OM

Nutan Varsha evam Sankranti Abhinandan

Sarve Bhavantu Sukhinah
Sarve Santu Niramaya
Sarve Bhadrani Pashyantu
Ma Kaschid Dukhbhag bhavet

O Lord ! Grant happiness to everyone.
May one and all enjoy a good health,
May all witness auspiciousness and
May none be unhappy.

The President and Members of the Arya Sabha Mauritius have the pleasure to wish you and your family a very Happy & Prosperous New Year 2016 & a Joyful Makar Sankranti.

1,Maharshi Dayanand Street,
Port Louis

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

समारोह पर समारोह

आर्य सभा मोरिशस द्वारा किये जा रहे उत्सवों को देखते हुए सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है कि किस हद तक सभा सेवा कार्य में लगी हुई है। शनिवार ता० १२ दिसम्बर २०१५ को डी.ए.वी. कोलिज मोर्सेल्माँ में ताबड़ तोड़ तीन-चार उत्सव मनाये गए। यथा – १. वृक्षारोपण, टेनिस कोर्ट का उद्घाटण डी.ए.वी. कोलिज मोर्सेल्माँ का १० वाँ स्थापना दिवस पर एक विशेष मागाज़िन का लोकार्पण और फ़ोटो वोल्तायिक का उद्घाटन। इसमें मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लक्ष्मण थीं। श्रम-मंत्री सुदेश कालीचन और पी.पी.एस. माननीय रामकोन भी उपस्थित थे।

रोज़ बेल में एक कोलिज

रविवार दि० १३.१२.२०१५ को दोपहर २.०० बजे सरकार द्वारा जो ज़मीन मिली है उस पर एक तीसरा डी.ए.वी. कोलिज निर्माणार्थ शिलान्यास विधि सम्पन्न की गयी। वहाँ भी पेड़-पौधे लगाये गये जिससे पर्यावरण की रक्षा होगी। वेदों में पेड़-पौधे एवं औषधि-वनस्पति की महिमा का गान किया गया है। ऋतु परिवर्तन की दिशा में पेड़-पौधों का बहुत बड़ा योगदान रहेगा। यद्यपि हमारे को लिए में फिस चुकाना पड़ेगा, पर बच्चों को प्रायवेट ट्र्यूसन न लेना पड़ेगा। पढ़ाई उच्च प्रकार की होगी जिसमें मानव मूल्य होगा। हम अपने बच्चों को केवल रोटी, कपड़ा, मकान कमाने के लायक न बना कर सच्चे अर्थ में मानव बनाने की कोशिश करेंगे।

आर्य सभा के अन्तरंग सदस्यों में लगभग सब उपस्थित थे। समारोह सफलतापूर्वक पूरा हुआ ।

पाँच दिसम्बर को आर्यसभा ने एक प्रेस सम्मेलन के दौरान इन सब बातों पर प्रकाश डाला था। प्रेस कोन्फरेन्स से पहले हमने ग्राँ पोर सावान के कुछ अभिभावों को बुलाकर इन सब बातों पर प्रकाश डाला था। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारा वह पुराना स्वप्न पूरा होगा। हम एक अच्छे कोलिज स्थापित करने में सफलीभूत होंगे।

सूरीनाम हिन्दी पाठशाला का वार्षिकोत्सव

रविवार दि० १३.१२.१५ को दोपहर १.०० बजे सूरीनाम आर्य समाज ने अपनी हिन्दी पाठशाला का ६२ वाँ वार्षिकोत्सव मनाया अपने मंदिर में जो स्कूल के बच्चों एवं अभिभावों से भरा था। हमें यह देखकर प्रसन्नता हुई कि स्कूल के बड़े बच्चों द्वारा वहाँ की पुरोहिता रोमोय जी की देख-रेख में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के बाद दस-बारह लड़कियों ने एक सामूहिक प्रार्थना की जो बहुत प्रेरणा दायक थी। चूँकि आर्यसभा के माननीय (Honorary) प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर और सभा उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम को एक-दूसरे कार्यक्रम में पहुँचना था इसलिए प्रार्थना के तुरन्त बाद उनको सम्बोधन करने का मौक़ा प्रदान किया गया। पर जाने से पहले दोनों महानुभावों के कर कमलों द्वारा पारितोषिक और प्रमाण पत्र वितरण करवाये गए ।

हमारे वहाँ पहुँचने के थोड़े ही समय बाद बारी-बारी से दो पूर्व मंत्री श्री श्री अरवे एमे और आलान गनू उपस्थित हुए उन दोनों ने भी बच्चों एवं अभिभावों को सम्बोधन किया। यद्यपि भारी बारिश की धूम थी बाहर, तथापि उत्सव की समाप्ति संतोष जनक ढंग से हुई।

६२ वाँ वार्षिकोत्सव

गत रविवार दि० २२ नवम्बर २०१५ को दोपहर २.०० बजे रिव्येर जी पोस्त आर्यसमाज की हिन्दी पाठशाला का ६२ वाँ सालाना उत्सव धूमधाम से मनाया गया। मौक़े पर आर्य सभा के प्रधान डा० उदयनारायण गंगू, उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम, कोषाध्यक्ष राजेन रामजी और अंतरंग सदस्य बिसुन बुलाकी । चुनाव क्षेत्र नं० १३ का सांसद माननीय मानेश गोबिन जी भी उपस्थित थे।

बच्चों द्वारा एक से एक रोचक कार्यक्रम पेश किये गए। कभी बच्चों ने कविता पाठ किया तो कभी लघु भाषण दिये तो कभी भजन-कीर्तन भी किये। परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों को पारितोषिक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।

माननीय गोबिन ने अपने संदेश के दौरान एक उदाहरण देते हुए कहा कि हिन्दी को विश्व की पहली भाषा बनने में देर नहीं है। पहले अंग्रेजी व फ्रेञ्छ से विश्व से सम्बन्ध जोड़ा जाता था आने वाले निकट भविष्य में हिन्दी सम्बन्ध जोड़ने की भूमिका निभायेगी इस लिए बच्चों से माँग की कि हिन्दी पढ़ना चाहिए।

चार दिवसीय महायज्ञ

प्लेन दे रोश में अभयदेव रामरूप के प्राँगण में चार दिवसीय यज्ञ गुरुवार से लेकर रविवार ता० २२ नवम्बर तक वेद मंत्रों द्वारा महायज्ञ सम्पन्न किया गया यह वर्षों से होता आ रहा है। यज्ञ पूरा करने के लिए सात सेस्यन रखे गए थे। पंडित-पंडिताओं के अलावा अन्य वेद पाठियों ने वेद मंत्रों के उच्चारण से आहुतियाँ दीं। नित्य प्रति सुबह-शाम दूर-करीब गाँवों व शहरों से यज्ञ प्रेमी उपस्थिति देते रहे। रविवार को समापन के मौक़े पर औसतन तीन सौ लोग उपस्थित थे। यज्ञ के बाद सभी लोगों को गरमा-गरम भोजन से सत्कार किया गया ।

समापन समारोह में सभा प्रधान डा० गंगू जी, उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम और महामंत्री श्री हरिदेव रामधनी के साथ श्रीमती रत्नभूषिता पूच्वा जी भी उपस्थित थीं।

ओ३म्

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग् भवेत ।।

हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुखारी ।
सब हों नीरोग भगवन् धन-धान्य के भण्डारी ।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी ।।

आर्य सभा मोरिशस

के

प्रधान एवं सभी अन्तरंग सदस्य

नूतन वर्ष तथा मंगलमय मकर संक्रान्ति २०१६

के पावन अवसर पर

आपको तथा आपके समाज के सभी सदस्यों एवं परिवारों को शुभ कामनाएँ समर्पित करते हैं ।

१,महर्षि दयानन्द गली,
पोर्ट लुई

Swami Shraddhanand : A role model – someone who falls in life but gets hold of himself

Pt. Manickchand Boodhoo, Arya Bhushan

Om parimāgne dus charitāt bādhaswa mā sucharite bhaj

The above is the first part of a hymn from the YajurVeda (4/28). Briefly it is a prayerful invocation of the devotee to the Lord to save him/her from sinful acts of characterlessness, recklessness, corruptions, violence, illicit sexual activities, etc. The devotee prays to the lord to strengthen his/her self (soul) to endow him/her with the supreme sense of rectitude in life so that he/she may rise higher and higher to realize the truth of human life in this mortal world.

This explanatory note of the above-quoted verse is my humble contribution to pay homage to the most revered Swami Shraddhanand – a towering stalwart of the Arya Samaj who dedicated his life in a most creative and constructive service according to the ideals of our great Rishi Swami Dayanand Saraswati.

BIRTH AND FAMILY

Born on 22 February 1857 in the Talwan City of Jallundhar District, Punjab, he was from a Khatri family of the Kshatriya lineage. He was the youngest son of a lineage of six children. Given two names in his childhood: Brihaspati and Munshiram, the second stuck to him till he became a Sanyasi.

His father Lala Nanackchand, a man of great rectitude and self-discipline, rose to become the Police Inspector of the city. Although a Sanatanist, he was a fan of Maharshi Dayanand Saraswati. Later he would prove very instrumental in the reform of his son through his repeated requests to Munshiram to attend the talks of the great Rishi who was visiting Punjab at that time.

EDUCATION

Munshiram was initiated in the Sacred Thread Ceremony in his childhood. He completed his primary and secondary education in the city of Varanasi. Later he studied law and became a famous and strong lawyer.

MARRIAGE, HOUSEHOLD LIFE & DEATH OF WIFE

At the age of 21, he married a girl named Shiv Devi. She was from a reputed family of lawyers and educationists of Jallundhar city. Shiv Devi was not as educated as Munshiram himself. But she was a virtuous woman who proved her mettle by rescuing her husband from the marshy land of sins.

Munshiram had four children from her – two boys and two girls. However, misfortune and bad fate would strike strongly claiming the death of his beloved wife leaving the responsibility of the four young children on his shoulders.

THE SLIPPERY GROUND OF YOUTH

The end of the 18th century was an age of slavery, poverty, exploitation, domination by a foreign power; rampant Muslim fundamentalism and conversion; the strong prejudices of a rigid caste system; and infectious religious malpractices were eating-up the Hindu society. These had already weakened the very soul of that great country that India was. Millions of a mass of humanity were rejected and labeled untouchables. The torture of women, the gross injustice perpetuated on helpless widows and the sin of early child marriage had corrupted the society to the bones.

The frequent communal strikes, the immoral palatial life-style revolving around women, wine and wealth was making life a hell in those days. And Munshiram as a young lawyer was witnessing all that. From inside, he was discouraged and disgusted. He had lost faith in Hinduism. He wanted to become a Christian. But the inner sinful life of the Christian priests held him aback. He decided to become an atheist.

Circumstances dragged him in the grip of a sinful life. He became a famous epicurean indulging himself in wine and women. His father Lala Nanackchand and his wife Shiv Devi ji were most concerned and were constantly thinking about how to salvage him to a better life.

Shiv Devi ji took care of him at home, submitted herself to her fate, served her husband selflessly. In a way, she nurtured her husband and saved him from the sinful life he had got entangled. Lalaji, his father would relentlessly requested his son to attend the inspiring discourses of the most revered Swami Dayanand Saraswati.

THE METAMORPHOSIS

Finally, their love and consideration brought a colossal metamorphosis in the life of Munshiram, making of him the greatest reformer just after Maharshi Dayanand Saraswati – the founder of the Arya Samaj.

HIS NEW RESOLVE AND STRUGGLE

At her deathbed Shiv Devi had requested Munshiram to remarry with only one humble condition : not to neglect the four children. Munshiram made a solemn resolve not to ever remarry! He stayed a widower all his life caring for his children and dedicated the rest of his life in the good service of the Arya Samaj and the propagation of the Vedic Dharma and philosophy. A rare example in history!

HIS IMMORTAL WORKS

He embraced the Vanprastha Ashram in 1892. He left his children in the care of his brother. He spent nine whole years as Vanprasthi exploring all the tenets of the Vaidik Dharma leaving no stone unturned in his way. He created and established the Gurukul Kangri in Haridwar thus fulfilling the dreams of Swami Dayanand Saraswati. He performed the Ashvamedha Yajna donating everything he had towards the realization of the Gurukul Project.

He honoured Mohundass Karamchand Gandhi as "Mahatma" after his return from Africa. After serving the Gurukul as Acharya, Mahatma Munshiram took Sanyasa in 1917 and then adopted the name of Swami Shraddhanand. He came to spend the rest of his life in New Delhi in 1918.

HIS NEW INTERESTS

Journalism and Politics became his new interest. He published papers like the Dainik Tej, Arjun and the Liberator. He wrote his own biography "Kalyan Marg Ke Pathik". He joined the Congress. He vehemently protested against the Rowlatt Act. He had already secured and rehabilitated 8,000 Malkhan Rajputs from the Muslims. Gandhi ji opposed the bringing back into the Hindu fold the 6,500,000 Harijan people and refused to ask the Muslims and Christians to stop converting Hindus to their faith. He resigned from the Congress as he disagreed on these fundamental issues.

HIS ASSASSINATION

However, he fell sick and was convalescing in his room when a Muslim terrorist / fanatic penetrated inside and fired bullets in his chest. He died a martyr to the cause of the Arya Samaj, the rejuvenation of the Vaidik Dharma and an ideal independent India. A crowd of about 5000 followers accompanied the funeral procession, indeed a glorious recognition immediately after his death.

Swami ji incarnated the very essence of the Vedic Prayer quoted at the very beginning of this article. That is the greatness of the message of the Vedas- the voice of GOD.

Shakespeare words: "Some are born great. Some achieve greatness. And some have greatness thrust upon" befits as a homage to Swami Shraddhanand. He is a vivid example of someone who fell in life but got hold of himself and recovered for the welfare of humanity as a whole.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचाय*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Swami Shraddhanand : The untold and supreme sacrifice

Sookraj Bissessur, B.A.,Hons

"In my own humble view and opinion, the Gurukul systems stood as the best, even far more better than the system introduced in India by Lord Macaulay in 1835 on the basis as British Education." (Sir Ramsay MacDonald Leader of the then Labour Party of the British Government who visited Gurukul and met Mahatma Munshiram).

Swami Shraddhanand ji stands out as a prominent social worker among the various stalwarts of the Arya Samaj Movement.

Munshiram (later known as Swami Shraddhanand) was born on 22nd February 1856 in the district of Talwan in Punjab. His father Lala Nanakchand was the Local Commissioner. Since his blooming youth, Munshiram was an atheist (non-believer in God), an alcoholic and his friends were of low character. His religious minded wife always stood by him and treated him with kindness and affection. With huge compassion she awakened the proper conscience of her husband. One day Munshiram started experiencing an inner feeling of great disgust and hence realized that he must absolutely undergo a total change in his behavior with the main object of becoming a better person.

On the insistence of his father, Munshiram attended a few lecturers of Swami Dayanand Saraswatee in Bareilly. That was the turning point in his life. He obtained a copy of Swami Dayanand's famous work, the Satyartha Prakash (Light of Truth), which he studied quite seriously and intensively. Munshiram enrolled as bona-fide member of the Arya Samaj in Lahore and became an ardent supporter. In 1891 he was elected President of Arya Pratinidhi Sabha in Punjab. Munshiram's influence spread far and wide in Punjab which became a strong hold of the Arya Samaj Movement. By this time Arya Samaj had created an innovating awareness of the Vedic Dharma among the Hindus in Northern India. As a result of the monumental efforts of Munshiram, the International Aryan League was formed at Delhi in 1908 and this brought a greater sense of co-ordination among the Arya Samajs in India as well as abroad.

The Arya Samaj struggled to ameliorate the pitiable social and educational status of women in Hindu society. Munshiram had the 'purdah' system discarded among his family members and sent his daughter to a mission school. In order to prevent the ever augmenting impact of Christianity, with the assistance of Lala Devaraj, he established a Kanya Vidyalaya in Jullundur Punjab, in 1890.

Munshiram had good vision to restore the Vedic concept of education through the Gurukul system. In 1902 he founded the Gurukul Kangri on the banks of River Ganges in Haridwar. This was followed by the establishment of similar schools by people like Rabindranath Tagore.

For the education of girls, Munshiram founded the Kanya Gurukul in 1923. The Gurukul was the first institution to offer education in the mother tongue up to secondary level.
Munshiram embraced the Vanaprastha Ashram, dedicating himself to the running of the Gurukul and became known as Mahatma Munshiram. He is regarded as the father of national education in India.

Mahatma Munshiram became a Sanyasi in 1917 and was known as Swami Shraddhanand. As a 'Karma Yogi' (devoted worker) he was deeply involved in various activities for the betterment of society, dedicating his noble services to the Arya Samaj Movement.

Immersing himself in the field of thought and culture, Hindi as a national language also attracted Swami Shraddhanand's attention and he changed his 'News Magazine' from Urdu to Hindi. He organized a society to uplift the downtrodden or so-called low caste communities, thus, at the same time encouraging the utilization of Hindi.

Swamiji also worked with unflagging zeal to bring greater solidarity among the Hindus. Orthodox Hindus were not, at any cost, prepared to accept those belonging to other faiths of Hindu religion. Hence, he started the Shuddhi Movement, whereby any person could be accepted as a Hindu after a prescribed religious ceremony.

As ill-luck would have it, the Shuddhi campaign aroused the wrath and anger of many. A young Muslim fanatic who fatally shot our Swamiji on 23 December 1926 at the age of 70. Thus, Swami Shraddhanand stands out as a symbol of martyrdom to the very cause of Vedic Dharma. Swamiji was and is still recognized as a powerful leader throughout India. His name will always remain immortal in this world.

Morals & Lessons which can be elicited from Swami Shraddhanands life:-

1. Man should always make untold sacrifice, if he/she wishes to attain resounding success in life.
2. We must always engage ourselves in social activities by adopting the philosophy of 'altruism' (that is doing good to others).
3. We must know and understand Vedic Dharma and culture.
4. We must always give top-priority in educating girls and women.
5. Solidarity is a matter of the heart and we should always endeavour to promote, solidarity.

NEW YEAR 2016

Pt. Jayechund Aukhojee, Arya Bhushan

New Year is approaching very fast. 2015 is ending in a few days. We often hear people saying 12 months have gone like 12 days. These days, one year is no longer a long period of time. People are already very busy with shopping and preparations for welcoming the New Year. Time makes no difference in happiness and sadness. When happiness prevails, sadness also occurs – death, loss in business, children's failure in exams etc. May God protect and sustain these people and bring some bliss to them.

Together with enjoyment, people also take stock of their business along the ending year – progress in business, bank accounts and success in all the fields. Very few people realise that each coming year is not only time to rejoice but also shortens the life time. Age and time go on and never come back. When childhood is gone, youth comes, when youth is gone adulthood prevails, when that is gone, old age comes, when old age goes senility appears and renders life worthless. Finally death puts a full stop.

As people are always preoccupied with progress, success profit and loss during the New Year and pray for improving their material situation, they should also consider their spiritual and social behaviour. It is often noted that many persons have no concern for spirituality and humanity. Can human values prevail without spirituality and community belonging? Human community is deterioting day by day.

As a measure of treatment of humanism, people should consider the following Vedic Laws – (1) 'Manurbhava' - be human, (2) 'Satyam –Vada' – speak the truth, (3) 'Hinsa mam kuru' – don't do violence, (4) 'Dharmam – chara'- be virtuous. To achieve these qualities, everybody should start his daily life by a prayer even for only 2 or 3 minutes.

For example – recite the gayatri mantra at least 5 times, in case of time shortage. Sandhya is the best prayer if time allows because it takes about 7 to 8 minutes. We should all plan to find time.

This is the only way to improve humanity and society and to obtain a long life of 100 years or even more - 'Shatam jivema' – May we live for 100 years. On the occasion of New Year everybody feels happy and enjoys, nobody thinks that every New Year means one year less in our life time. Somebody who is already 75 years in 2016, he will have only 24 years to go in 2017, there remains only 23 years, and so on. Man's life is like a bank loan to be refunded in 100 yearly terms.

A very Happy New Year 2016 to all. May the almighty bless the whole world with health, wealth and peace.

SWAMI SHRADDHANAND

One of the few eminent builders of the Indian nation
a valiant warrior of the war of independence
a living portrait of bravery and sacrifice
a symbol of renunciation and penance
a noble soul and fearless patriot.

An appeal that he found irresistible
the call from Swami Dayanand Saraswati
to live and preach the ideals of the Vedic Dharma
and to serve the Arya Samaj.

Founded of the Gurukul at Kangri at Haridwar
as a unique seat of learning
in line with the ideals of the Vedic seers
to produce good and disciplined citizens
imbued with ancient Vedic ideals and a national outlook.

Founded of several other institutions
for the uplift of the social, moral and cultural status of the people
for the education of girls and womenfolk.

Initiated the Shuddhi movement whereby
converted people were accepted as Hindus
after the 'Shuddhi Sanskara'
conferred the title of 'Mahatma" to Mohandas Karamchand Gandhi
upon the latter's return from South Africa.

Founded two prominent dailies: 'Tej' in Urdu and 'Arjun' in Hindi
plunged headlong into the agitation under the leadership of Gandhiji
had a leading role in infusing life into the people
organised 'hartals' and protests against the Rowlatt Act
enacted by the British Government.

A valiant Arya Sanyasi who served the people
without any distinction of caste or creed
had the unique honour of preaching to the Muslims
from the pulpit of the greatest and
the most famous mosque of India,
the Delhi Jama Masjid.

Bare-breast, he dared a soldier
who threatened to fire at the crowd
to shoot him.

Architect of the historic Congress session
at Amritsar when Punjab was writhing
under the atrocities by the British Government
under martial law
introduced the programme
for eradication of untouchability which was adopted.

Withdrew his support to Congress
due to ideological differences
on the 'Ghar vapasi' programme
after Gandhiji called upon him
to put an end to the Shuddhi movement.

Always stood in the front line
of the Arya Samaj movement
made the Arya Samaj a centre of power
contributed to its popularity
by his disinterested work
and exemplary practical life.

A towering personality
and a source of eternal inspiration.
lived up to a martyr's death
while on his sick bed
died at the gun shots
of a misguided assassin
on 23 December 1926.

QUOTES :

"He lived a hero and died a hero"
(Mahatma Gandhi)

"A biblical prophet walking the shores of Galilee"
(Ramsay Macdonald)

Yogi Bramdeo MOKOONLALL,
Darsanacharya
Arya Sabha Mauritius, Port Louis

Bibliography: Internet

LA PURIFICATION DE L'ESPRIT

Om ! Yajjagrato dūramudaity daivam tadu suptasya tathaivaiti
Durangamam jyotishām jyotirekam tanme manaha shiva sankalpamastu.

cont. from pg 1

Avant-propos

Dans ses activités l'homme est limité par sa capacité, mais son esprit ne l'est pas. C'est un fait indéniable que l'esprit peut voir sans les yeux, peut tout entendre sans les oreilles, peut marcher sans les pieds, peut voler sans les ailes, et peut parcourir de très longues distances sans les jambes.

L'esprit est aussi appelé « La lumière des lumières, c'est-à-dire, il est le maître et la lumière qui éclaire et qui guide nos sens. Avant tout, nos sens sont des instruments à l'aide desquels nous bâtissons notre connaissance– notre monde du savoir à nous.

Mais si nous avons l'esprit ailleurs, même avec les yeux grands ouverts nous ne pourrons rien voir, et nous ne pourrons également rien entendre bien que nous ayons des oreilles saines. Nos sens ne fonctionnent que quand l'esprit les active. Quand l'esprit ne fonctionne pas, les activités de tous nos organes cessent.

Néanmoins, les sens importent peu, mais c'est l'esprit qui prime. C'est lui qui est cette force motrice qui les active. Ils ne sont que ses outils qui l'aident tout d'abord à acquérir la connaissance et puis à traduire en action ou réaliser sa pensée. Quoique virtuellement l'on pense que les sens fonctionnent indépendamment.

Quand l'esprit est malveillant il nous mène vers la décadence ou la ruine, mais quand il est inspiré des pensées sublimes il apporte la paix, la joie, le bonheur, le progrès et la tranquillité dans notre vie aussi bien que dans la société.

C'est bien évident que notre esprit possède les deux tendances extrêmes. Il peut être constructif aussi bien que destructif.

La qualité destructrice de notre esprit est vraiment indésirable et condamnable. Il faut à tout prix ne pas laisser engendrer en nous cette tendance négative voire démoniaque. L'on peut y arriver. Il y a un moyen sûr. C'est par la pratique du yoga.

Interprétation / Anushilan

Toute personne, qui adopte (fait sienne) la voie spirituelle tracée par le Seigneur et qui vit en compagnie des sages, finit par acquérir plusieurs moyens efficaces de purifier son esprit et son âme, et d'avoir une maîtrise parfaite de ses sens et de soi-même.

Ainsi lorsqu'elle est en état de veille (Jāgrit awasthā me) son esprit, qui est plus rapide que l'éclair, parcourt de très longues distances, possède des qualités splendides qui l'aident à accomplir avec succès tout ce qu'elle entreprend dans sa vie. Jouissant de toute sa lucidité et de toutes ses facultés, elle n'est pas sujette à l'erreur.

Une telle personne, même dans l'état de rêve (swapna awasthā me) a une emprise totale sur son esprit, qui est de nature extrêmement agile et rapide, et qui s'aventure sans cesse très loin. Elle ne pense jamais à faire du mal aux autres. Au contraire elle reste toujours avenante et disposée à aider tout le monde.

Une personne pareille, dans l'état de sommeil profond (sushupti awasthā me), jouit d'un repos complet de son corps, de son esprit, et de son âme, c'est-à-dire, elle est gratifiée par le Seigneur d'un sommeil paisible et réparateur. Elle passe par un état idéal de détente et de relaxation complète où il n'y a aucune connaissance du monde extérieur, ni aucun rêve.

A son réveil, elle se sentira toute fraîche, débordante de vigueur et en pleine forme pour entamer une nouvelle journée de travail avec beaucoup d'entrain.

C'est un tel état de sommeil (c'est-à-dire, un sommeil profond) que l'on doit souhaiter atteindre lorsque l'on va se coucher, en récitant chaque soir cette prière en provenance du Yajur Véda.

Pour terminer, voici en bref cette prière spéciale qui nous transmet ce verset du Yajur Véda :

"O Seigneur ! Océan de miséricorde ! Que par ta bienveillance mon esprit, qui possède des qualités merveilleuses, soit pourvu de ta lumière divine et puissante qui éclaire et active tous mes sens, tous mes systèmes vitaux et les autres facultés de mon corps durant toute ma vie !

Que par ta grâce, mon esprit, pendant l'état de veille ou de rêve, soit toujours inspiré des pensées nobles et salutaires dans toutes mes actions ! Qu'il ait une approche sympathique envers tout le monde ! Qu'il ne souhaite jamais à faire du mal à quiconque !"